(I)

Lecture No:- 37.

On line Class.
Date - 9-5-2020
Time - 10:50 to 11:40 A.M.

Topic,

(1) Theories of punishment.

Dr. Surita Kumari
Depart. of Philosophy
B.A Part - II Paper (5.)
A.N.D. College Shahpur
Patory, Samastipur,

Ans:- प्राचीन युग से ही सामाजिक नियमों को भंग करने वाले व्यक्ति को दण्डित किया जाता है। दण्ड का अर्थ कष्ट पीड़ा से होता है। जिसे कानूनी प्रावधानों के अनुसार न्यायिक निर्णय के द्वारा अपराधी व्यक्ति को दण्ड दिया जाता है। दण्डशास्त्र में अपराधी व्यक्ति को दण्डित करने वाले विभिन्न सिद्धान्त प्रचलित रहे हैं। जिसमें से प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं।

(1.) प्रतिशोधात्मक सिद्धान्त।
(2.) निरोधात्मक अथवा प्रतिरोधात्मक सिद्धांत।
(3) सुधारात्मक सिद्धान्त।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

(4) प्रायश्चित का सिद्धान्त।
(5) आदर्शवादी सिद्धान्त।

दण्ड का प्रतिशोधात्मक सिद्धान्त
(Retributive Theory of Punishment)

:-> दण्ड के इस सिद्धान्त का मूलाधार "जैसे को तैसा" टिट फॉर टैट (Tit for Tat) है। अपराधी को उसके द्वारा पहुंचायी गयी क्षति के बदले में दण्डित किया जाना चाहिए। सिजविक ने भी लिखा है कि दण्ड की व्यवस्था सामाजिक सुरक्षा हेतु की गई है। जर्मन दण्ड व्यवस्था में "आँख के इस सिद्धान्त का समर्थन किया है। इस सिद्धान्तानुसार अपराधी को राज्य के द्वारा अपनी सामूहिक क्षमता में प्रदत्त किसी व्यक्ति की ओर से किया गया प्रतिशोध अथवा प्रतिकार है। अपराधिक कार्य

P.T.O.

Scanned with CamScanner

एक ऐसी आपत्ति है, जिसका हिस्सेदार वह स्वयं भी हो होता है। इससे स्पष्ट है कि इस सिद्धान्त का प्रमुख आधार नैतिक न्याय है तथा इसके अनुसार " अच्छे कार्य के लिए पुरस्कार तथा बुरे कार्य के लिए दण्ड " प्रदान किया जाना चाहिये।

यदि किसी व्यक्ति ने दूसरे की हत्या की है तो उसको प्राणदण्ड अथवा किसी ने दूसरे व्यक्ति की पत्नी या पुत्र की हत्या की है तो उसकी पत्नी या पुत्र की हत्या की जाती है। प्रतिशोधक अथवा प्रतिकारात्मक सिद्धांत की प्रमुख विशेषता होती है कि दण्ड अपराधी अपनी आपराधिक कृत द्वारा दूसरे व्यक्ति के जिन अधिकारों का हनन या अतिक्रमण किया गया है जिसको भी उसी प्रकार के अधिकारों से वंचित कर दिया जाये। ब्रेडले के अनुसार " हम दण्ड इसलिए भुगतते हैं कि हम इसके योग्य हैं " T.C.E.N.D.

Scanned with CamScanner